Raj Express (Indore), 29th October 2024, Page-15

इंदौर के एजुकेशन हब बनने में डीएविवि, आईआईटी, आईआईएम की मुख्य भूमिका

एजुकेशन हब कहे जाने वाले इंदौर में दो दशकों में उच्च शिक्षा में भारी बदलाव आया है। इंदौर में एक ओर देवी अहिल्या विश्वविद्यालय जहां प्रदेश ही नहीं बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर कई मुकाम हासिल कर रहा है, तो वहीं दूसरी ओर आईआईटी इंदौर और आईआईएम इंदौर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर साझेदारी कर छात्रों को विशेष सुविधाएं और शिक्षण दे रहा है।

● इंदौर/पीयूष मौर्य

निजीकरण, शिक्षा की बढ़ी हुई लागत, क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा, नौकरी के अवसरों में कमी, और इन सभी के साथ कोरोना महामारी कुछ ऐसे कारण हैं जिन्होंने उद्योग को अपनी प्रक्रियाओं और प्रणालियों को पुनर्स्थापित के लिए मजबूर किया है। जहां उद्योग तेजी से नियुक्ति प्रणाली में बदलाव करते हुए निश्चित कौशल से परिपूर्ण कर्मचारियों की मांग कर रहा है, वहीं छात्र और अभिभावक शिक्षा को एक निवेश के रूप में देख रहे हैं और अपने समय और धन के निवेश पर अच्छे रिटर्न की मांग कर रहे हैं।

उद्योग उच्च शिक्षा द्वारा निर्मित इसी 'उत्पाद' की गुणवत्ता के बारे में चिंतित है, क्योंकि उद्योग के अनुसार स्नातक उद्योग के लिए तैयार नहीं हैं। यह परिदृश्य शैक्षिक संस्थानों के लिए नई प्रणाली स्थापित करने, प्रभावी संसाधन उपयोग सुनिश्चित करने और समग्र संगठनात्मक प्रभावशीलता के लिए प्रयास करने की मांग करता है। इंदौर शिक्षा के क्षेत्र में इन सभी कारकों पर खरा उतर रहा है।

आईआईएम इंदौर वैश्विक स्तर पर

इस वर्ष, आईआईएम इंदौर ने अपनी वैश्विक रैंक में उल्लेखनीय प्रगति की है। संस्थान को एफटी मास्टर इन मैनेजमेंट रैंकिंग में दुनियाभर में 83 स्थान और करियर प्रगति में प्रतिष्ठित 24 स्थान प्राप्त हुआ है। संस्थान के पीजीपीएमएक्स कार्यक्रम को क्यूएस एग्जीक्यूटिव एजुकेशन रैंकिंग की ओर से एशिया प्रशांत में शीर्ष 25 ईएमबीए कार्यक्रमों में भी स्थान दिया गया। साथ ही एडुनिवर्सल 4 पाम रैंकिंग में संस्थान ने 2 रैंक प्राप्त की। इसके साथ ही, आईआईएम इंदौर के एग्जीक्यूटिव एजुकेशन प्रोग्राम्स ने फायनेंशियल टाइम्स एक्जीक्यूटिव एजुकेशन (ओपन) श्रेणी में वैश्विक स्तर पर 61 स्थान अर्जित किया, साथ ही कस्टमाइज्ड में 85 स्थान प्राप्त किया। यह दुनियाभर के वर्किंग प्रोफेशनल्स के लिए उच्च प्रभाव वाले शिक्षण अनुभव प्रदान करने में संस्थान की विशेषज्ञता को प्रदर्शित करता है। साथ ही, संस्थान स्थिरता और नवाचार के लिए प्रतिबद्ध है। संस्थान का कैंपस भी विस्तारित हो रहा है। 432 करोड़ रुपए की यह परियोजना पूरी तरह से सौर ऊर्जा द्वारा संचालित नेट-जीरो पर केंद्रित है। कैंपस में एक

थिंक टैंक, स्टार्टअप्स के लिए एक इन्क्यूबेशन सेंटर और एक डॉग शेल्टर है, जो संस्थान के समुदाय-केंद्रित दृष्टिकोण को दर्शाता है। इसके अलावा, संस्थान में लगभग 10,000 किलोग्राम जैविक अपशिष्ट से खाद बनाई जाती है और सालाना 2,500 पेड़ लगाए जाते हैं। इसमें दुर्लभ और औषधीय किस्मों सहित 355 से अधिक पौधों की प्रजातियां शामिल हैं। वर्षा जल संचयन और सौर ऊर्जा से चलने वाले बुनियादी ढांचे जैसी ऊर्जा-कुशल प्रथाओं के माध्यम से, आईआईएम इंदौर परिसर की स्थिरता और हरित पहलों में अग्रणी है।

वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने के लिए सशक्त बना रहे

भविष्य में, आईआईएम इंदौर शीर्ष 50 वैश्विक बिजनेस स्कूलों में शामिल होने, अंतर्राष्ट्रीय साझेदारी का विस्तार करने, सामाजिक कल्याण पर केंद्रित शोध को आगे बढ़ाने और समावेशिता में विस्तार के लिए प्रयासरत है। संस्थान जटिल वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए सुसज्जित सामाजिक रूप से जागरूक प्रबंधकों को विकसित करने पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। आईआईएम इंदौर का पाठ्यक्रम पर्यावरण, सामाजिक और शासन (ईएसजी) सिद्धांतों के साथ संबद्ध है, और वैश्विक सहयोग, नवीन शोध और वास्तविक दुनिया की समस्या-समाधान के प्रति प्रतिबद्धता पर जोर देता है। आईआईएम इंदौर प्रबंधन शिक्षा में अपनी वैश्विक उपस्थिति को और भी मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध है। 24 देशों में 60 अंतर्राष्ट्रीय सहयोगों के साथ, आईआईएम इंदौर अपने इंटरनेशनल नेटवर्क का और विस्तार कर रहा है ताकि ऐसा पाठ्यक्रम तैयार किया जा सके जो वैश्विक स्तर से संरेखित हो, बाजार की जरूरतों को समझे और नवाचार को बढ़ावा दे। आईआईएम इंदौर का लक्ष्य शीर्ष 50 वैश्विक रैंकिंग तक पहुंचना है। साथ ही दुनिया भर के वर्किंग प्रोफेशनल्स को शिक्षा प्रदान करने के साथ ही समावेशिता पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। रणनीतिक साझेदारी, टिकाऊ परिसर पहल और अत्याधुनिक कार्यक्रमों के माध्यम से, आईआईएम इंदौर भविष्य के लीडरों और मैनेजरों को सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन की दृष्टि से जटिल वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने के लिए सशक्त बना रहे हैं।

■ **प्रो. हिमांशु राय,** निदेशक, आईआईएम इंदौर